



स्वामी विवेकानंद के चिंतन में मनुष्य निर्माण की अवधारणा : एक समकालीन अध्ययन

डॉ. पूनम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मर्यादा पुरुषोत्तम पी. जी. कॉलेज, भुडुसरी, रतनपुरा, मऊ (उ.प्र.)

e-mail : punamsingh19781@gmail.com

Received: 10 July 2026 | Accepted: 18 July 2026 | Published: 25 August 2026

सारांश

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारतीय चिंतन के ऐसे प्रमुख विचारक हैं जिनके चिंतन में व्यक्ति, शिक्षा, समाज, धर्म, संस्कृति और राष्ट्र एक-दूसरे से गहरे रूप में संबद्ध दिखाई देते हैं। उनके विचारों की केंद्रीय विशेषता मनुष्य की अंतर्निहित शक्ति में विश्वास तथा उसके समग्र व्यक्तित्व के विकास पर बल है। विवेकानंद के लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना, परीक्षा उत्तीर्ण करना अथवा रोजगार हासिल करना नहीं था, बल्कि ऐसी मानव शक्ति का निर्माण करना था जो आत्मविश्वासी, चरित्रवान, विवेकशील, निर्भीक, आत्मनिर्भर और समाज के प्रति उत्तरदायी हो। इसी व्यापक संदर्भ में उनकी 'मनुष्य निर्माण' की अवधारणा को समझा जा सकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में स्वामी विवेकानंद के चिंतन में मनुष्य निर्माण के दार्शनिक आधार, शिक्षा की भूमिका, चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, शक्ति, सेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण के साथ उसके संबंध का विश्लेषण किया गया है। साथ ही वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था, युवा चेतना, उच्च शिक्षा और तकनीकी परिवर्तन के संदर्भ में इस अवधारणा की प्रासंगिकता पर विचार किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि विवेकानंद की मनुष्य निर्माण की अवधारणा व्यक्ति के भीतर ज्ञान और शक्ति का विकास करने के साथ-साथ उसे सामाजिक जीवन के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने पर बल देती है। वर्तमान समय में इस अवधारणा का पुनर्पाठ शिक्षा को अधिक मानवीय, मूल्यपरक, रचनात्मक और उत्तरदायी बनाने में उपयोगी हो सकता है।

प्रमुख शब्द: स्वामी विवेकानंद, मनुष्य निर्माण, शिक्षा, चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, मानवतावाद, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्र निर्माण।

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद का व्यक्तित्व और चिंतन आधुनिक भारतीय पुनर्जागरण की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में माना जाता है। उनका जीवन ऐसे समय में सामने आया जब भारत औपनिवेशिक शासन के प्रभाव, सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक कठिनाइयों और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के संकट से गुजर रहा था। दूसरी ओर पश्चिमी शिक्षा और आधुनिक विचारों का प्रभाव भारतीय समाज में नई बौद्धिक हलचल पैदा कर रहा था। इस संक्रमणकाल में विवेकानंद ने भारतीय परंपरा को केवल अतीत की स्मृति के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसे आधुनिक परिस्थितियों में पुनर्व्याख्यायित करने का प्रयास किया। उनके चिंतन में भारतीय वेदांत, मानवीय गरिमा, आत्मविश्वास, सेवा, शिक्षा और सामाजिक पुनर्निर्माण के तत्व एक साथ दिखाई देते हैं।

विवेकानंद की विशेषता यह थी कि उन्होंने भारत के पुनर्निर्माण का प्रश्न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं किया। उनके लिए किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों के चरित्र, आत्मविश्वास, ज्ञान और सामाजिक चेतना में निहित होती है। इसलिए वे मनुष्य निर्माण की आवश्यकता पर विशेष बल देते हैं। उनकी दृष्टि में यदि व्यक्ति कमजोर, निराश, भयभीत और आत्मविश्वासहीन है तो केवल बाहरी संस्थागत परिवर्तन समाज को स्थायी रूप से सशक्त नहीं कर सकता। इसके विपरीत जागरूक, आत्मनिर्भर, चरित्रवान और उत्तरदायी व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सकता है। विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचारों को इसी पृष्ठभूमि में समझना आवश्यक है। उनके लिए शिक्षा का अर्थ किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में तथ्यों और सूचनाओं का संग्रह करना नहीं था। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में पहले से निहित क्षमताओं को अभिव्यक्त करना था। इस दृष्टि से शिक्षा एक आंतरिक विकास प्रक्रिया है। व्यक्ति के भीतर जो संभावनाएँ मौजूद हैं, शिक्षा उनका विकास करती है और उन्हें सामाजिक उपयोगिता से जोड़ती है। इसलिए शिक्षा और मनुष्य निर्माण उनके चिंतन में लगभग अविभाज्य हो जाते हैं।

‘मनुष्य निर्माण’ शब्द अपने आप में विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन की व्यापकता को व्यक्त करता है। इसका आशय केवल एक शिक्षित व्यक्ति के निर्माण से नहीं है। विवेकानंद जिस मनुष्य की कल्पना करते हैं, उसमें ज्ञान के साथ साहस, चरित्र के साथ संवेदना, आत्मविश्वास के साथ विनम्रता, स्वतंत्रता के साथ अनुशासन और व्यक्तिगत विकास के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय होना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य निर्माण उनके लिए शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास की समेकित प्रक्रिया है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इसी अवधारणा को उसके व्यापक दार्शनिक एवं सामाजिक संदर्भ में समझना है। साथ ही यह जानने का प्रयास किया गया है कि विवेकानंद के मनुष्य निर्माण संबंधी विचार वर्तमान शिक्षा, युवा चेतना, उच्च शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में किस प्रकार प्रासंगिक हो सकते हैं। इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। स्वामी विवेकानंद की मूल रचनाओं, उनके शिक्षा-दर्शन और जीवन पर उपलब्ध साहित्य तथा समकालीन अध्ययनों को आधार बनाकर उनके विचारों की व्याख्या की गई है। अध्ययन का मुख्य केंद्र विवेकानंद की 'मनुष्य निर्माण' संबंधी अवधारणा है।

स्वामी विवेकानंद के चिंतन में मनुष्य निर्माण की अवधारणा

विवेकानंद की मनुष्य निर्माण अवधारणा का सबसे महत्वपूर्ण आधार मनुष्य की अंतर्निहित शक्ति में विश्वास है। उनके चिंतन में मनुष्य को कमजोर, असहाय और परिस्थितियों का निष्क्रिय परिणाम मानने की प्रवृत्ति का विरोध मिलता है। वे व्यक्ति को अपनी शक्ति पहचानने और उसे रचनात्मक दिशा में प्रयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके लिए शक्ति का अर्थ केवल शारीरिक सामर्थ्य नहीं है। मानसिक दृढ़ता, आत्मविश्वास, नैतिक साहस, विवेक, आत्मसंयम और कठिन परिस्थितियों में सक्रिय बने रहने की क्षमता भी शक्ति के ही रूप हैं।

विवेकानंद के चिंतन में आत्मविश्वास को विशेष महत्व प्राप्त है। जिस व्यक्ति को अपनी क्षमताओं पर विश्वास नहीं है, वह बाहरी परिस्थितियों से आसानी से प्रभावित हो सकता है। इसके विपरीत आत्मविश्वासी व्यक्ति चुनौतियों का सामना करने, निर्णय लेने और अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने की क्षमता विकसित करता है। विवेकानंद की मनुष्य निर्माण की अवधारणा इसी आत्मविश्वास को शिक्षा के माध्यम से विकसित करना चाहती है। उनके विचार में शिक्षा व्यक्ति को भय और निर्भरता से मुक्त करके आत्मबल की ओर ले जाने वाली प्रक्रिया होनी चाहिए। आत्मविश्वास को अहंकार से अलग करके समझना आवश्यक है। आत्मविश्वास का अर्थ दूसरों से श्रेष्ठ होने का दावा नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं और अपनी आंतरिक शक्ति पर विश्वास करना है। ऐसा व्यक्ति असफलता से टूटता नहीं बल्कि उससे सीखने का प्रयास करता है। आधुनिक संदर्भ में यह विचार विद्यार्थियों में आत्म-प्रभावकारिता, मानसिक दृढ़ता और सकारात्मक आत्मबोध विकसित करने की दिशा में उपयोगी वैचारिक आधार प्रदान कर सकता है।

आत्मनिर्भरता भी मनुष्य निर्माण की अवधारणा का महत्वपूर्ण पक्ष है। विवेकानंद के लिए आत्मनिर्भरता का अर्थ समाज से अलग हो जाना नहीं है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपनी समस्याओं के समाधान के लिए सोचने, निर्णय लेने और कार्य करने की क्षमता विकसित करे। आत्मनिर्भर व्यक्ति

ही सामाजिक जीवन में अधिक सार्थक योगदान दे सकता है। इस प्रकार व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व विवेकानंद के चिंतन में विरोधी नहीं बल्कि पूरक तत्व हैं। विवेकानंद के मनुष्य निर्माण दर्शन में चरित्र का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ज्ञान यदि व्यवहार में परिवर्तन उत्पन्न नहीं करता तो उसका सामाजिक मूल्य सीमित हो जाता है। इसलिए उनके लिए शिक्षा का वास्तविक परिणाम व्यक्ति के चरित्र में दिखाई देना चाहिए। चरित्र का अर्थ केवल धार्मिक आचरण नहीं बल्कि सत्यनिष्ठा, अनुशासन, साहस, आत्मसंयम, कर्तव्यबोध, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुणों से है।

चरित्र निर्माण की यह धारणा वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। आज शिक्षा में अंक, प्रमाणपत्र, प्रतियोगी परीक्षाएँ और रोजगार महत्वपूर्ण उद्देश्य बन गए हैं। ये आवश्यक हैं, लेकिन यदि शिक्षा का पूरा उद्देश्य केवल इन्हीं तक सीमित हो जाए तो व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक विकास की उपेक्षा हो सकती है। विवेकानंद की दृष्टि इस सीमित दृष्टिकोण को व्यापक बनाने का अवसर प्रदान करती है। उनके अनुसार शिक्षित व्यक्ति वह है जो अपने ज्ञान का उपयोग विवेकपूर्ण और उत्तरदायी ढंग से कर सके। विवेकानंद की शिक्षा-दृष्टि में बौद्धिक विकास और चरित्र निर्माण के बीच संतुलन आवश्यक है। वे ऐसे व्यक्ति की कल्पना करते हैं जिसमें सोचने की क्षमता के साथ कार्य करने की क्षमता भी हो। ज्ञान को व्यवहार में बदलने की क्षमता मनुष्य निर्माण का महत्वपूर्ण चरण है। इसी कारण उनके चिंतन में कर्म का विशेष महत्व है।

विवेकानंद के लिए कर्म केवल जीविका का साधन नहीं है। कर्म व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का माध्यम भी हो सकता है। यदि व्यक्ति अपने कार्य को ईमानदारी, अनुशासन और सेवा-भाव से करता है तो वही कार्य उसके चरित्र निर्माण में योगदान देता है। आधुनिक संदर्भ में इस विचार को व्यावसायिक नैतिकता और उत्तरदायी नागरिकता से जोड़ा जा सकता है। मनुष्य निर्माण की अवधारणा में आध्यात्मिकता का भी महत्वपूर्ण स्थान है। विवेकानंद की आध्यात्मिकता व्यक्ति को निष्क्रिय बनाने वाली अवधारणा नहीं है। इसके विपरीत उसमें आत्मशक्ति, निर्भीकता और मानव-सेवा का सक्रिय पक्ष दिखाई देता है। वेदांत की उनकी व्याख्या में प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक मूलभूत गरिमा और क्षमता को स्वीकार किया गया है। इस कारण मनुष्य के प्रति सम्मान उनके चिंतन का स्वाभाविक परिणाम बनता है।

विवेकानंद के लिए धर्म का अर्थ केवल बाहरी अनुष्ठानों या संकीर्ण पहचान से नहीं था। वे धर्म को व्यक्ति के आंतरिक विकास और मानवीय चेतना से जोड़ते हैं। इसीलिए उनकी धार्मिक दृष्टि में सेवा का विशेष महत्व है। मनुष्य की सेवा को व्यापक आध्यात्मिक चेतना से जोड़ने के कारण उनके

चिंतन में धर्म और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संबंध स्थापित होता है। विवेकानंद के चिंतन में स्वतंत्र चिंतन भी महत्वपूर्ण है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल तैयार उत्तर देना नहीं बल्कि उसे प्रश्न करने और स्वयं निष्कर्ष तक पहुँचने योग्य बनाना है। आज के लोकतांत्रिक समाज में आलोचनात्मक चिंतन एक महत्वपूर्ण नागरिक गुण है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों को विभिन्न विचारों का परीक्षण, तर्क का मूल्यांकन और अपने निर्णय का निर्माण करना होता है। इस दृष्टि से विवेकानंद की आत्मनिर्भर शिक्षा की अवधारणा आधुनिक नागरिक शिक्षा के साथ संवाद स्थापित कर सकती है।

शिक्षा, चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व

विवेकानंद के लिए शिक्षा मनुष्य निर्माण की सबसे प्रभावशाली प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति के भीतर निहित क्षमताओं को विकसित करती है और उसे जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। शिक्षा यदि केवल सूचना प्रदान करती है तो उसका प्रभाव सीमित रह सकता है लेकिन यदि वह व्यक्ति के विचार, व्यवहार और चरित्र में परिवर्तन लाती है तो वह वास्तविक अर्थ में शिक्षा बनती है। विवेकानंद की शिक्षा-दृष्टि का मूल उद्देश्य व्यक्ति के भीतर ऐसी शक्ति उत्पन्न करना है जिससे वह स्वयं सोच सके, अपने निर्णय ले सके और अपने जीवन को सार्थक दिशा दे सके। इस दृष्टि से शिक्षा स्वतंत्र व्यक्तित्व का निर्माण करती है। शिक्षा व्यक्ति को निर्भरता और भय से मुक्त करके आत्मविश्वास की ओर ले जाती है।

विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाला व्यक्ति नहीं है। वह विद्यार्थी के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला मार्गदर्शक और प्रेरक है। शिक्षक का अपना आचरण विद्यार्थियों के लिए उदाहरण बनता है। इसलिए शिक्षक में विषयगत दक्षता के साथ नैतिक विश्वसनीयता, संवेदनशीलता और विद्यार्थियों की क्षमताओं को पहचानने की क्षमता भी आवश्यक है। आज शिक्षक की भूमिका तकनीकी बदलाव के कारण बदल रही है। विद्यार्थी इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जानकारी प्राप्त कर सकता है, लेकिन सूचना के मूल्यांकन, उसके उचित उपयोग और नैतिक दिशा के लिए शिक्षक की भूमिका बनी रहती है। इसलिए शिक्षक को केवल 'ज्ञान देने वाले' के रूप में देखने के बजाय 'मार्गदर्शक और व्यक्तित्व-निर्माता' के रूप में देखना विवेकानंद की दृष्टि के अधिक निकट है।

विवेकानंद के मनुष्य निर्माण दर्शन में सामान्य जनता की शिक्षा का भी विशेष महत्व है। शिक्षा को कुछ विशेष वर्गों तक सीमित रखना सामाजिक विकास की संभावनाओं को सीमित करता है। समाज के व्यापक वर्गों को शिक्षा और अवसर प्राप्त होने चाहिए ताकि उनकी क्षमताओं का विकास हो

सके। इस दृष्टि से शिक्षा सामाजिक सशक्तीकरण का माध्यम बन जाती है। महिला शिक्षा भी इसी व्यापक संदर्भ का महत्वपूर्ण पक्ष है। किसी समाज का समग्र विकास तब तक संभव नहीं है जब तक महिलाओं को शिक्षा और आत्मविकास के पर्याप्त अवसर न मिलें। समकालीन संदर्भ में विवेकानंद के विचारों को समान अवसर, लैंगिक न्याय और सामाजिक भागीदारी की अवधारणाओं से जोड़कर देखा जा सकता है।

विवेकानंद की मनुष्य निर्माण अवधारणा व्यक्तिगत विकास को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। यदि शिक्षा व्यक्ति को सक्षम बनाती है तो उस क्षमता का उपयोग समाज के कल्याण में होना चाहिए। व्यक्ति के विकास की अंतिम सार्थकता सामाजिक उपयोगिता में दिखाई देती है। इस दृष्टि से सेवा मनुष्य निर्माण की स्वाभाविक परिणति बनती है। सेवा के माध्यम से व्यक्ति अपने निजी हितों से आगे बढ़कर समाज की समस्याओं से जुड़ता है। शिक्षा से प्राप्त ज्ञान यदि समाज की समस्याओं के समाधान में उपयोगी हो तो शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य पूरा होता है। इसलिए विवेकानंद के चिंतन में शिक्षा और सेवा के बीच गहरा संबंध है।

आज उच्च शिक्षा संस्थानों में सामुदायिक सेवा, राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर, पर्यावरणीय गतिविधियों, ग्राम विकास, साक्षरता और सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक जीवन से जोड़ा जा सकता है। ऐसे अनुभव शिक्षा को जीवन और समाज से जोड़ने में सहायक होते हैं। चरित्र निर्माण को भी इसी सामाजिक संदर्भ में समझना चाहिए। चरित्रवान व्यक्ति केवल व्यक्तिगत रूप से ईमानदार नहीं होता बल्कि सार्वजनिक जीवन में भी अपनी जिम्मेदारियों को समझता है। सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहिष्णुता, सहयोग और सामाजिक संवेदना लोकतांत्रिक नागरिकता के लिए भी आवश्यक गुण हैं। विवेकानंद के कर्मयोग संबंधी विचार इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। कार्य को केवल निजी लाभ से जोड़ने के बजाय उसे कर्तव्य और सेवा से जोड़ना व्यक्ति के चरित्र को विकसित कर सकता है। आधुनिक संदर्भ में यह विचार व्यावसायिक नैतिकता, सार्वजनिक उत्तरदायित्व और सामाजिक प्रतिबद्धता से जोड़ा जा सकता है।

मनुष्य निर्माण, युवा चेतना और राष्ट्र निर्माण

विवेकानंद के चिंतन में युवा शक्ति को विशेष महत्व प्राप्त है। युवा अवस्था में ऊर्जा, साहस, प्रयोगशीलता और परिवर्तन की क्षमता होती है। इसलिए युवाओं में आत्मविश्वास, अनुशासन और सक्रियता का विकास उनके मनुष्य निर्माण दर्शन का महत्वपूर्ण पक्ष है। युवाओं को केवल भविष्य की शक्ति मानना पर्याप्त नहीं है। वे वर्तमान सामाजिक जीवन के भी सक्रिय सहभागी हैं। शिक्षा के माध्यम

से यदि उनमें आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक संवेदना, नेतृत्व क्षमता और उत्तरदायित्व विकसित किया जाए तो वे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सार्थक योगदान दे सकते हैं।

विवेकानंद की दृष्टि में युवा शक्ति का अर्थ केवल शारीरिक ऊर्जा नहीं है। मानसिक साहस, विचारों की स्वतंत्रता, नैतिक दृढ़ता और सामाजिक जिम्मेदारी भी युवा शक्ति के आवश्यक तत्व हैं। आज के संदर्भ में इस विचार को रचनात्मक नेतृत्व और जिम्मेदार नागरिकता से जोड़ा जा सकता है। वर्तमान भारत में युवा वर्ग अनेक अवसरों और चुनौतियों के बीच खड़ा है। डिजिटल तकनीक, उच्च शिक्षा, उद्यमिता और वैश्विक रोजगार ने नई संभावनाएँ पैदा की हैं, जबकि प्रतिस्पर्धा, रोजगार की अनिश्चितता और तेजी से बदलती तकनीक नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती हैं। ऐसे वातावरण में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की विवेकानंदीय अवधारणा उपयोगी हो सकती है।

हालाँकि युवा सशक्तीकरण को केवल प्रेरणात्मक संदेशों तक सीमित नहीं किया जा सकता। उसके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार के अवसर, सामाजिक सुरक्षा और रचनात्मक वातावरण भी आवश्यक हैं। इसलिए विवेकानंद की युवा चेतना की अवधारणा को संस्थागत और सामाजिक परिस्थितियों के साथ जोड़कर समझना आवश्यक है। मनुष्य निर्माण और राष्ट्र निर्माण का संबंध विवेकानंद के चिंतन की महत्वपूर्ण विशेषता है। उनके लिए राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों की गुणवत्ता में निहित थी। यदि नागरिक शिक्षित, चरित्रवान, आत्मविश्वासी और सामाजिक रूप से उत्तरदायी होंगे तो राष्ट्र की सामूहिक शक्ति भी मजबूत होगी।

राष्ट्र निर्माण को केवल राजनीतिक सत्ता या आर्थिक विकास तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। सामाजिक एकता, नागरिक जिम्मेदारी, शिक्षा, नैतिकता, सेवा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी भी राष्ट्र निर्माण के महत्वपूर्ण आयाम हैं। विवेकानंद की मनुष्य निर्माण अवधारणा इन सभी तत्वों के बीच संबंध स्थापित करने की संभावना रखती है। उनके चिंतन में व्यक्ति और राष्ट्र का संबंध एकतरफा नहीं है। राष्ट्र व्यक्ति को सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण प्रदान करता है, जबकि व्यक्ति अपने ज्ञान, श्रम, चरित्र और सेवा के माध्यम से राष्ट्र को मजबूत करता है। इस प्रकार व्यक्ति और राष्ट्र एक-दूसरे के विकास में सहभागी हैं।

विवेकानंद का राष्ट्र संबंधी चिंतन सांस्कृतिक आत्मविश्वास से भी जुड़ा हुआ है। उन्होंने भारतीय समाज को अपनी परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के प्रति आत्मविश्वास विकसित करने का संदेश दिया। किंतु उनके विचारों को समकालीन बहुलतावादी समाज में पढ़ते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सांस्कृतिक आत्मविश्वास का अर्थ अन्य संस्कृतियों या समुदायों के प्रति असम्मान नहीं होना चाहिए। वर्तमान लोकतांत्रिक संदर्भ में इसे विविधता के सम्मान और पारस्परिक सहअस्तित्व के

साथ जोड़ा जाना चाहिए। इस संदर्भ में मनुष्य निर्माण की अवधारणा लोकतांत्रिक नागरिकता से भी जुड़ सकती है। ऐसा नागरिक जो अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को समझता हो, दूसरों की गरिमा का सम्मान करता हो और सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहभागी बनता हो, वह राष्ट्र के लोकतांत्रिक विकास में योगदान दे सकता है।

समकालीन संदर्भ में विवेकानंद की मनुष्य निर्माण अवधारणा

समकालीन शिक्षा—व्यवस्था तेजी से बदल रही है। डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ऑनलाइन शिक्षा ने ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इस परिवर्तन के कारण शिक्षा की भूमिका पर नए सिरे से विचार करना आवश्यक हो गया है। आज सूचना प्राप्त करना पहले की तुलना में बहुत आसान है, लेकिन सूचना का विवेकपूर्ण उपयोग, उसका मूल्यांकन और उसके नैतिक परिणामों को समझना अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। इस संदर्भ में विवेकानंद की मनुष्य निर्माण अवधारणा विशेष महत्व प्राप्त करती है। तकनीक व्यक्ति को जानकारी दे सकती है, लेकिन चरित्र, नैतिक विवेक, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास केवल तकनीकी साधनों से स्वतः नहीं हो जाता। इसलिए शिक्षा को तकनीकी दक्षता के साथ मानवीय गुणों के विकास पर भी बल देना होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के वर्तमान दौर में विद्यार्थियों की रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन को विशेष महत्व देना आवश्यक है। यदि तकनीक तैयार उत्तर उपलब्ध कराती है तो शिक्षा का उद्देश्य केवल उत्तर याद कराना नहीं रह सकता। विद्यार्थियों को प्रश्न करने, तर्क करने, विभिन्न स्रोतों का मूल्यांकन करने और स्वतंत्र निष्कर्ष तक पहुँचने की क्षमता विकसित करनी होगी। विवेकानंद की आत्मनिर्भर और स्वतंत्र चिंतन पर आधारित शिक्षा—दृष्टि इस संदर्भ में महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान कर सकती है। उच्च शिक्षा के संदर्भ में भी मनुष्य निर्माण की अवधारणा उपयोगी है। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने वाले संस्थान नहीं हैं। वे विचार निर्माण, नागरिक चेतना, नेतृत्व, सामाजिक संवेदना और शोध संस्कृति के केंद्र हैं। यदि उच्च शिक्षा में विषयगत ज्ञान के साथ चरित्र, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी महत्व दिया जाए तो शिक्षा का व्यापक प्रभाव संभव है।

समकालीन शिक्षा में मूल्य—आधारित शिक्षा का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। मूल्य केवल पुस्तकों में पढ़ाने से विकसित नहीं होते। वे व्यवहार, संस्थागत वातावरण और सामाजिक अनुभवों से विकसित होते हैं। शिक्षक का आचरण, विद्यार्थी—शिक्षक संबंध, संस्थान की कार्यसंस्कृति और सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता इस प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। विवेकानंद की शिक्षक—केंद्रित मनुष्य निर्माण अवधारणा इस बात पर विशेष ध्यान आकर्षित करती है। मनुष्य निर्माण की अवधारणा को

आधुनिक संदर्भ में समावेशी बनाना भी आवश्यक है। आज समाज में जातीय, भाषायी, धार्मिक, लैंगिक और सांस्कृतिक विविधता मौजूद है। इसलिए मनुष्य निर्माण का उद्देश्य ऐसा व्यक्तित्व विकसित करना होना चाहिए जो विविधता का सम्मान करे और समान मानवीय गरिमा को स्वीकार करे। इस प्रकार विवेकानंद के मानवीय दृष्टिकोण को आधुनिक संवैधानिक मूल्यों के साथ संवाद में रखा जा सकता है।

विवेकानंद के विचारों की आलोचनात्मक व्याख्या आवश्यक है। उन्नीसवीं शताब्दी की परिस्थितियों में निर्मित उनके विचारों को इक्कीसवीं शताब्दी के सामाजिक संदर्भ में उसी रूप में लागू करना उचित नहीं होगा। आधुनिक लोकतंत्र, मानवाधिकार, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संवैधानिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए उनके विचारों का पुनर्पाठ आवश्यक है। विशेष रूप से 'मनुष्य निर्माण' को किसी एक धार्मिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक आदर्श तक सीमित करना उनके चिंतन की व्यापकता को कम कर सकता है। इसके बजाय इसे मानवीय क्षमता, आत्मविश्वास, चरित्र, स्वतंत्र चिंतन, सामाजिक संवेदना और उत्तरदायित्व के विकास की व्यापक अवधारणा के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

विवेकानंद की अवधारणा से वर्तमान शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश यह मिलता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल सफल व्यक्ति बनाना नहीं बल्कि सक्षम और उत्तरदायी मनुष्य बनाना होना चाहिए। सफलता यदि सामाजिक संवेदना से जुड़ी हो तो उसका प्रभाव व्यापक होता है। इसी प्रकार आत्मनिर्भरता यदि सेवा से जुड़ी हो तो व्यक्ति का विकास समाज के विकास में योगदान कर सकता है। इस प्रकार विवेकानंद की मनुष्य निर्माण अवधारणा को छह प्रमुख आयामों में देखा जा सकता है— आत्मबोध, आत्मविश्वास, चरित्र, ज्ञान—विवेक, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व। आत्मबोध व्यक्ति को अपनी क्षमता पहचानने में सहायता करता है। आत्मविश्वास उसे सक्रिय बनाता है। चरित्र उसके व्यवहार को दिशा देता है। ज्ञान और विवेक उसे निर्णय लेने योग्य बनाते हैं। सेवा उसे समाज से जोड़ती है और सामाजिक उत्तरदायित्व उसके व्यक्तित्व को व्यापक सार्वजनिक जीवन से संबद्ध करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद की मनुष्य निर्माण की अवधारणा उनके समग्र चिंतन की केंद्रीय कड़ी है। इसमें शिक्षा व्यक्ति के भीतर ज्ञान, आत्मविश्वास, चरित्र और शक्ति के विकास का माध्यम बनती है। यह शिक्षा व्यक्ति को केवल व्यक्तिगत सफलता के लिए तैयार नहीं करती बल्कि उसे समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनने की प्रेरणा देती है। वर्तमान समय में जब शिक्षा तकनीकी, रोजगारपरक और प्रतिस्पर्धात्मक होती जा रही है, विवेकानंद का मनुष्य निर्माण दर्शन शिक्षा

के व्यापक मानवीय उद्देश्य पर पुनर्विचार का अवसर प्रदान करता है। उनके विचारों का आधुनिक उपयोग अतीत को यथावत दोहराने के बजाय उनके मूल मानवीय तत्वों के आलोचनात्मक पुनर्पाठ में निहित है। आत्मविश्वास, चरित्र, स्वतंत्र चिंतन, आत्मनिर्भरता, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व आज भी शिक्षा और नागरिक जीवन के महत्वपूर्ण मूल्य हैं।

इस अर्थ में स्वामी विवेकानंद की मनुष्य निर्माण अवधारणा केवल उनके समय की शैक्षिक आवश्यकता का उत्तर नहीं थी, बल्कि व्यक्ति और समाज के संबंध को समझने का एक व्यापक वैचारिक ढाँचा भी प्रस्तुत करती है। आज के भारत में यदि शिक्षा ज्ञान के साथ विवेक, कौशल के साथ चरित्र, आत्मनिर्भरता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व और तकनीकी क्षमता के साथ मानवीय संवेदना का विकास करती है, तो शिक्षा का उद्देश्य अधिक व्यापक और सार्थक हो सकता है। यही स्वामी विवेकानंद के मनुष्य निर्माण दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता है।

संदर्भ सूची :

1. Medhananda, S. (2020). Was Swami Vivekananda a Hindu supremacist? Revisiting a long-standing debate. *Religions*, 11(7), 368.
2. Nikhilananda, S. (1953). *Vivekananda: A biography*. Ramakrishna-Vivekananda Center.
3. Vivekananda, S. (n.d.). *Letters of Swami Vivekananda*. Advaita Ashrama.
4. Vivekananda, S. (n.d.). *The complete works of Swami Vivekananda (Vols. 1–9)*. Advaita Ashrama.
5. Vivekananda, S. (n.d.). *My idea of education*. Advaita Ashrama.
6. विवेकानंद, स्वामी (2006) शिक्षा. रामकृष्ण मठ।
7. विवेकानंद, स्वामी (2006) वर्तमान भारत. रामकृष्ण मठ।
8. विवेकानंद, स्वामी (2006) हमारा भारत. रामकृष्ण मठ।
9. विवेकानंद, स्वामी (2006) उत्तिष्ठत जाग्रत. रामकृष्ण मठ।
10. विवेकानंद, स्वामी (2006) सरल राजयोग. रामकृष्ण मठ।
11. विवेकानंद, स्वामी (2006) व्यक्तित्व का विकास. रामकृष्ण मठ।
12. विवेकानंद, स्वामी (2006) विवेक वचनावली. रामकृष्ण मठ।
13. विवेकानंद, स्वामी (2006) भारत और उसकी समस्याएँ. रामकृष्ण मठ।
14. विवेकानंद, स्वामी (2006) धर्म और दर्शन. रामकृष्ण मठ।
15. विवेकानंद, स्वामी (2006) व्यावहारिक वेदांत. रामकृष्ण मठ।
16. विवेकानंद, स्वामी (2006) कोलंबो से अल्मोड़ा तक. रामकृष्ण मठ।
17. विवेकानंद, स्वामी (2006) कर्म और उसका रहस्य. रामकृष्ण मठ।
18. विवेकानंद, स्वामी (2006) ज्ञानयोग पर प्रवचन. रामकृष्ण मठ।
19. विवेकानंद, स्वामी (2006) शिकागो वक्तृता. रामकृष्ण मठ।
20. विवेकानंद, स्वामी (2018) राजयोग. रामकृष्ण मठ।
21. विवेकानंद, स्वामी (2018) ज्ञानयोग. रामकृष्ण मठ।

22. विवेकानंद, स्वामी (2018) कर्मयोग. रामकृष्ण मठ ।
23. विवेकानंद, स्वामी (2018) भक्तियोग. रामकृष्ण मठ ।
24. विवेकानंद, स्वामी (2018) विवेकानंद साहित्य (खंड 1 दृ10). अद्वैत आश्रम ।
25. गंभीरानंद, स्वामी (2001) युगनायक विवेकानंद. रामकृष्ण मठ ।
26. निखिलानंद, स्वामी (2004) विवेकानंद: जीवन और दर्शन. रामकृष्ण मठ ।
27. रानडे, एकनाथ (2013) स्वामी विवेकानंद का जीवन और संदेश. विवेकानंद केंद्र ।
28. त्रिपाठी, प्रयोग नारायण (2026) स्वामी विवेकानंद का शिक्षा—दर्शन. नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ।
29. पाण्डेय, राम शकल (2005) स्वामी विवेकानंद एवं डॉ. एनी बेसेंट के शिक्षा—दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन. हिंदी साहित्य निकेतन ।
30. शारदानंद, स्वामी (2010) श्रीरामकृष्ण लीला प्रसंग. अद्वैत आश्रम ।